लघु कथा लेखन

लघु कथाएँ सीमित शब्दों में गहन अभिव्यंजना करती हैं। पाठकों के अंतर्मन तक पहुँचकर अपना संदेश उन तक पहुँचाना ही लघु कथा का मुख्य उद्देश्य होता है। पाठकों को प्रभावित व संतुष्ट करना ही लघु कथा लेखन का वास्तविक उद्देश्य होता है।

Topic Notes

- अंक विभाजन
- संदेश लेखन का प्रारूप
- संदेश लेखन के तत्व
- संदेश लेखन के प्रकार
- औपचारिक संदेश
- अनौपचारिक संदेश

लघु कथा साहित्य की प्रचलित और लोकप्रिय विधा है। लघु का अर्थ होता है–'संक्षिप्त' परन्तु संक्षिप्त होने के बावजूद भी पाठकों पर इसका प्रभाव दीर्घकाल तक बना रहता है। इस प्रकार लघु कथा 'गागर में सागर' भरने वाली अनुपम विधा है। लघु कथा कल्पना प्रधान कृति है परन्तु इसकी प्रेरणा प्राय: अपने इर्द-गिर्द की वास्तविकताओं और घटनाओं से भी मिल जाती है। नई शिक्षा पद्धति के अनुसार कहानी लेखन हेतु **अंक-योजना** इस प्रकार है–

कहानी लेखन (लघु कथा लेखन) कक्षा 10वीं के लेखन कौशल के भाग-इ में पूछा जाने वाला प्रश्न है। यह प्रश्न 5 अंकों के लिए पूछा जाता है। इस प्रश्न में आपको विकल्प दिए जाते हैं और आपको अपनी इच्छा से कोई एक विकल्प चुनकर लिखना होता है। इस प्रश्न की शब्द सीमा सीमित रखी जाती है जो 100 से 120 शब्दों की होती है।

लघु कथा लेखन की परिभाषा

जीवन की किसी एक घटना के रोचक वर्णन को 'कथा' कहते हैं।

कथा सुनने, पढ़ने और लिखने की एक लम्बी परम्परा हर देश में रही है क्योंकि यह सबके लिए मनोरंजक होती है। बच्चों को कथा सुनने का बहुत चाव होता है। दादी और नानी की कथाएँ प्रसिद्ध हैं। इन कथाओं का उद्देश्य मुख्यत: मनोरंजन होता है किन्तु इनसे कुछ-न-कुछ शिक्षा भी मिलती है। कथा लिखना एक कला है। हर कथा-लेखक अपने ढंग से कथा लिखकर उसमें विशेषता पैदा कर देता है। वह अपनी कल्पना और वर्णन-शक्ति से कथा के कथानक, पात्र या वातावरण को प्रभावशाली बना देता है।

"लघुकथा 'गागर में सागर' भर देने वाली विधा है। लघुकथा एक साथ लघु भी है और कथा भी। यह न लघुता को छोड़ सकती है और न कथा को ही।"

—भारत-दर्शन

लघु कथा की विशेषताएँ

- **कथानक :** लघु कथा के कथानक में घटनाओं के विस्तार का आभाव होता है। कथा के अंत में विस्मयकारी मोड़ कथा को एक नया आयाम प्रदान करता है।
- **पात्र-योजना :** लघु कथा में पात्रों की संख्या एक-दो तक ही सीमित होती है। कथा के पात्र प्रभावशाली होते हैं, जिससे उनका प्रभाव दीर्घकाल तक पाठक के मानस पटल पर अंकित रहता है।
- **कल्पना की उड़ान :** लघु कथा में यथार्थ के साथ-साथ काल्पनिक अभिव्यक्ति भी हो सकती है। लघु कथा में राजा, रानी, पशु-पक्षी आदि काल्पनिक पात्र भी हो सकते हैं और काल्पनिक घटनाएँ भी।
- **संक्षिप्तता :** लघु कथा का सारा कलेवर उसकी लघुता में निहित होता है। अत: 'संकेतात्मकता' लघु कथा की शैली का विशिष्ट गुण है। शैली की दृष्टि से लघु कथा गद्य के समान सुगठित होती है।
- **उपदेशात्मकता :** उपदेशात्मकता लघु कथा का विशिष्ट गुण है; लघु कथा में कोई न कोई उपदेश अवश्य होना चाहिए।

लघु कथा के तत्व

लघुकथा के तीन तत्व (1) क्षणिक घटना, (2) संक्षिप्त कथन, (3) तीक्ष्ण प्रभाव हैं। इनमें से कोई एक भी कमजोर हो तो लघुकथा प्रभावहीन होगी।

स्मरणीय बिंदु

- *दी गई रूपरेखा अथवा संकेतों के आधार पर ही कथा का विस्तार करना चाहिए।*
- *कथा में विभिन्न घटनाओं और प्रसंगों को संतुलित विस्तार देना चाहिए। किसी प्रसंग को न बहुत अधिक संक्षिप्त लिखना चाहिए, न अनावश्यक रूप से बहुत अधिक बढ़ाना चाहिए।*
- *कथा का आरम्भ आकर्षक होना चाहिए ताकि कथा पढ़ने वाले का मन उसे पढ़ने में लगा रहे।*
- *कथा की भाषा सरल, स्वाभाविक तथा प्रभावशाली होनी चाहिए। उसमें बहुत अधिक कठिन शब्द तथा लम्बे वाक्य नहीं होने चाहिए।*
- *कथा को उपयुक्त एवं आकर्षक शीर्षक देना चाहिए।*
- *कथा को प्रभावशाली और रोचक बनाने के लिए मुहावरों व लोकोक्तियों का प्रयोग भी किया जा सकता है।*
- *कथा हमेशा भूतकाल में ही लिखी जानी चाहिए।*
- *कथा का अंत सहज ढंग से होना चाहिए।*
- *अंत में कथा से मिलने वाली सीख स्पष्ट व संक्षिप्त होनी चाहिए।*

लघु कथा लेखन की विधियाँ

निम्नलिखित विधियों से लघुकथा लिखने का अभ्यास करें–

- संकेत बिंदुओं के आधार पर लघुकथा
- चित्रों के आधार पर लघुकथा
- शीर्षक के आधार पर लघुकथा

1. संकेत-बिंदुओं के आधार पर लघुकथा

रूपरेखा या दिए गए संकेतों के आधार पर कथा लिखना कठिन भी है, सरल भी। लेकिन इस प्रकार की कथा लिखने के लिए कल्पना से अधिक काम लेना पड़ता है। ऐसी कथा लिखने में वे ही छात्र अपनी क्षमता का परिचय दे सकते हैं, जिनमें सर्जनात्मक और कल्पनात्मक शक्ति अधिक होती है। इसके लिए छात्र को संवेदनशील और कल्पनाप्रवण होना चाहिए।

उदाहरण : **दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लघुकथा लिखिए और उससे मिलने वाली शिक्षा तथा शीर्षक भी लिखिए–**

संकेत बिंदु : बारिश का अभाव..., एक भेड़िया..., चरागाह में भेड़ों का झुंड..., सारा पानी भी पी जाना..., भेड़ें वहाँ से भाग गईं...

भेड़िए की योजना

एक बार पूरे देश में सूखा पड़ गया। बारिश के अभाव में सभी नदी-नाले सूख गए। कहीं पर भी अन्न का एक दाना नहीं उपजा। बहुत से जानवर भूख और प्यास से मर गए। पास ही के जंगल में एक भेड़िया रहता था। उस दिन वह अत्यधिक भूखा था। भोजन न मिलने की वजह से वह बहुत दुबला हो गया था।

एक दिन उसने जंगल के पास स्थित चरागाह में भेड़ों का झुंड देखा। चरवाहा उस समय वहाँ पर नहीं था। वह अपनी भेड़ों के लिए पीने के पानी की बाल्टियाँ भी छोड़कर गया था। भेड़ों को देखकर भेड़िया खुश हो गया और सोचने लगा, "मैं इन सब भेड़ों को मारकर खा जाऊँगा और सारा पानी भी पी जाऊँगा।" फिर वह उनसे बोला, "दोस्तों, मैं अत्यधिक बीमार हूँ और चलने-फिरने में असमर्थ हूँ। क्या तुम में से कोई मुझे पीने के लिए थोड़ा पानी दे सकता है।" उसे देखकर भेड़ें सतर्क हो गईं। तब उनमें से एक भेड़ बोली, "क्या तुम हमें बेवकूफ समझते हो? हम तुम्हारे पास तुम्हारा भोजन बनने के लिए हरगिज नहीं आएँगे।" इतना कहकर भेड़ें वहाँ से भाग गईं। इस प्रकार भेड़ों की सतर्कता के कारण भेड़िए की योजना असफल हो गई और बेचारा भेड़िया बस हाथ मलता ही रह गया।

शिक्षा : *बुद्धि सबसे बड़ा धन है।*

वर्णनात्मक प्रश्न

1. दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लघुकथा लिखिए और उससे मिलने वाली शिक्षा तथा शीर्षक भी लिखिए–

संकेत बिंदु : दो भाई घर में अकेले..., फाइल में आतंकियों की जानकारी..., आतंकियों का घर में घुसना..., फाइल खोजना..., कमरे में बंद ..., आतंकी गिरफ्तार...।

उत्तर :

चतुर अर्जुन

एक दिन अर्जुन और उसका छोटा भाई करण दोनों घर में अकेले थे। उनके पिताजी एक पुलिस अधिकारी थे। वे एक लाल रंग की फाइल घर लाए थे। उसमें सभी कुख्यात आतंकवादियों के बारे में जानकारी संग्रहित थी।

अर्जुन जानता था कि पापा ने वह फाइल एक अलमारी में सुरक्षित रखी हुई है। अर्जुन और करण खेल रहे थे कि तभी दो आतंकवादी उनके घर में घुस आए और बोले, "लाल फाइल कहाँ है?" अर्जुन बड़ा चालाक था।

वह बोला, "शयनकक्ष की अलमारी में ऊपर रखी हुई है। मैं वहाँ तक नहीं पहुँच सकता।" दोनों आतंकवादी लाल फाइल को हासिल करने के लिए उस कमरे में गए। जब वे अलमारी में फाइल ढूँढ रहे थे, तब अर्जुन ने धीरे-से उस कमरे का दरवाजा बाहर से बंद कर दिया और पिताजी को भी फोन कर दिया। जल्दी ही उसके पिताजी पुलिस लेकर वहाँ पहुँच गए।

दोनों आतंकवादियों को गिरफ्तार कर लिया गया। इस प्रकार अर्जुन ने अपनी चतुराई से दोनों आतंकवादियों को पकड़वा दिया। सभी ने उसकी खूब सराहना की।

शिक्षा : *मुसीबत में भी सचेत रहना चाहिए।*

2. दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लघुकथा लिखिए और उससे मिलने वाली शिक्षा तथा शीर्षक भी लिखिए—

संकेत बिंदु : पालतू चिड़िया, ताजा पानी और दाना..., चालाक बिल्ली डॉक्टर का वेश धारण कर वहाँ पहुँची..., स्वास्थ्य परीक्षण..., बिल्ली की चाल को तुरंत समझ गई..., दुश्मन बिल्ली..., मायूस होकर बिल्ली वहाँ से चली गई...।

उत्तर :

चालाक चिड़िया

एक व्यक्ति ने अपनी पालतू चिड़ियों के लिए एक बड़ा-सा पिंजरा बनाया। उस पिंजरे के अंदर सभी चिड़ियाँ आराम से रह सकती थीं। वह व्यक्ति प्रतिदिन उन चिड़ियों को ताजा पानी और दाना देता।

एक दिन उस व्यक्ति की अनुपस्थिति में एक चालाक बिल्ली डॉक्टर का वेश धारण करके वहाँ पहुँची और बोली, "मेरे प्यारे दोस्तों! पिंजरे का दरवाजा खोलो। मैं एक डॉक्टर हूँ और तुम सबके स्वास्थ्य परीक्षण के लिए यहाँ आई हूँ।"

समझदार चिड़ियाँ बिल्ली की चाल को तुरंत समझ गईं। वे उससे बोलीं, "तुम हमारी दुश्मन बिल्ली हो। हम तुम्हारे लिए दरवाजा हरगिज नहीं खोलेंगी। यहाँ से चली जाओ। तब बिल्ली बोली, "नहीं, नहीं। मैं तो एक डॉक्टर हूँ। तुम मुझे गलत समझ रही हो। मैं तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचाऊँगी। कृपया दरवाजा खोल दो।" लेकिन चिड़ियाँ उसकी बातों में नहीं आईं। उन्होंने उससे स्पष्ट रूप से मना कर दिया। आखिरकार मायूस होकर बिल्ली वहाँ से चली गई।

शिक्षा : *समझदारी किसी भी मुसीबत को टाल सकती है ।*

3. दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लघुकथा लिखिए और उससे मिलने वाली शिक्षा तथा शीर्षक भी लिखिए—

संकेत बिंदु : आश्रम, नटखट शिष्य..., दीवार फाँदना..., उसके गुरुजी यह बात जानते थे..., दीवार पर सीढ़ी लगी दिखाई दी..., नीचे उतरने में मदद..., गुरुजी के प्रेमपूर्ण वचन..., गलती के लिए क्षमा...।

उत्तर :

सबक

एक समय की बात है। एक आश्रम में रवि नाम का एक शिष्य रहता था। वह बहुत अधिक नटखट था । वह प्रत्येक रात आश्रम की दीवार फाँदकर बाहर जाता था परन्तु उसके बाहर जाने की बात कोई नहीं जानता था।

सुबह होने से पहले लौट आता था। वह सोचता था कि उसके आश्रम से बाहर जाकर घूमने की बात कोई नहीं जानता लेकिन उसके गुरु जी यह बात जानते थे। वे रवि को रंगे हाथ पकड़ना चाहते थे। एक रात हमेशा की तरह रवि सीढ़ी पर चढ़ा और दीवार फाँदकर बाहर कूद गया।

उसके जाते ही गुरुजी जाग गए। तब उन्हें दीवार पर सीढ़ी लगी दिखाई दी। कुछ घंटे बाद रवि लौट आया और अंधेरे में दीवार पर चढ़ने की कोशिश करने लगा। उस वक्त उसके गुरुजी सीढ़ी के पास ही खड़े थे। उन्होंने रवि की नीचे उतरने में मदद की और बोले, "बेटा, रात में जब तुम बाहर जाते हो तो तुम्हें अपने साथ एक गर्म शॉल अवश्य रखनी चाहिए।

गुरुजी के प्रेमपूर्ण वचनों का रवि पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने अपनी गलती के लिए क्षमा माँगी। साथ ही उसने गुरुजी को ऐसी गलती दोबारा न करने का वचन भी दिया।

शिक्षा : *प्रेमपूर्ण वचनों का सबक जिंदगी भर याद रहता है।*

4. दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लघुकथा लिखिए और उससे मिलने वाली शिक्षा तथा शीर्षक भी लिखिए—

संकेत बिंदु : पुराने समय में राजा..., राजा नि:संतान..., राजा द्वारा बच्चे को गोद लेने की घोषणा..., राजा द्वारा पौधा देना और 5 महीने बाद मिलना..., सभी का बालक पर हँसना, राजा द्वारा निर्णय लेना, ईमानदारी का फल मिलना।

उत्तर :

ईमानदारी

पुराने समय की बात है। किसी राज्य में एक राजा राज करता था। राजा का स्वभाव काफी अच्छा था और उसके राज्य की प्रजा भी राजा के काम-काज से खुश थी। राजा को केवल एक बात का ही सुख नहीं था और वह बात थी कि राजा नि:संतान था।

एक दिन राजा को ऐसा विचार आया कि अपने राज्य में से किसी बच्चे को गोद ले लूँ। उसे मैं उत्तराधिकारी बना पाऊँ और वह मेरे आगे के सारे काम-काज को संभाल पाए। राजा ने अपने राज्य में यह घोषणा करवा दी।

राजा की घोषणा के अनुसार सभी बच्चे राजमहल में एकत्रित हुए। राजा ने उन सभी बच्चों को पौधे लगाने के लिए दिए और कहा कि अब हम पाँच महीने के बाद मिलेंगे और देखेंगे किसका पौधा सबसे अच्छा खिला या पनपा हुआ है। साथ ही साथ राजा ने सभी को यह भी कहा कि जिसका पौधा सबसे अच्छा पनपा हुआ होगा मैं उस बच्चे को गोद लूँगा।

पाँच महीने बाद सभी बच्चे अपना-अपना पौधा लेकर राजा के महल में पहुँच गए। सभी के पौधे खिले हुए थे। वहीं मृदुल के गमले में बीज फूटा ही नहीं था। वह घबरा गया और राजा से कहा कि उसने भी पानी से दोनों समय पौधे को सींचा था परंतु अंकुर फूटा ही नहीं। सभी उसकी बात पर हँसने लगे।

तब राजा क्रोधित हो उठे और सबको अपना पौधा रखने को कहा। साथ ही बताया कि मैंने जो बीज दिया था वह बंजर था। लाख प्रयास करने पर भी उसमें से अंकुर नहीं फूट पाएगा। मृदुल ने ईमानदारी और साहस का परिचय दिया। अंकुर न फूटने पर भी वह गमले के साथ राजमहल पहुँचा।

राजा उसकी ईमानदारी से बहुत ज्यादा खुश थे। राजा ने उस बच्चे को गोद ले लिया और साथ में राज्य का उत्तराधिकारी भी बना दिया।

शिक्षा : *ईमानदारी का फल मीठा होता है।*

5. ⓐदिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लघुकथा लिखिए और उससे मिलने वाली शिक्षा तथा शीर्षक भी लिखिए—

संकेत बिंदु : एक लकड़हारा..., लकड़हारे का दिन-रात परिश्रम करना..., साधु द्वारा आगे बढ़ने की प्रेरणा देना..., चंदन वन से मालामाल होना, पुनः साधु द्वारा आदेश देना व लकड़हारे को चाँदी व सोने की खान मिलना और उसका मालामाल हो जाना...।

2. शीर्षक के आधार पर लघु कथा

शीर्षक के आधार पर लघु कथा करते समय हमें ध्यान रखना चाहिए कि कहानी शीर्षक के आस-पास ही घूमे जिससे कहानी का सार तो स्पष्ट हो साथ-साथ शिक्षा व शीर्षक भी स्पष्ट हो जाए।

उदाहरण : **'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत' शीर्षक को आधार बनाकर लघुकथा लिखिए और उससे मिलने वाली शिक्षा भी लिखिए—**

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

किसी देश में अमरसेन नाम का एक राजा था। वह बहुत वीर और प्रजा का हित चाहने वाला था। उसकी प्रजा भी उसे बहुत चाहती थी। एक बार किसी बात से नाराज़ होकर उसके पड़ोसी राजा ने उस पर आक्रमण कर दिया। राजा अमरसेन अपनी सेना के साथ बहुत वीरता से लड़ा परंतु भाग्य ने उसका साथ नहीं दिया। युद्ध में उसकी पराजय हुई। उसके बहुत से सैनिक मारे गए। शत्रु के सैनिक उसे जीवित पकड़ना चाहते थे पर वह किसी तरह युद्ध भूमि से बचकर वहाँ से भाग निकला। शत्रु से बचता-बचाता वह एक जंगल में जा पहुँचा। वह छिपकर एक गुफ़ा में रहने लगा। गुफ़ा में रहते-रहते उसे अपने परिवार व देश की बहुत याद आती थी । वह किसी तरह अपना खोया राज्य पुनः पाना चाहता था, परंतु उसे कोई उपाय सूझ नहीं रहा था। वह मन हारकर बैठ गया। एक दिन वह गुफ़ा में बैठा कुछ सोच रहा था, तभी उसकी दृष्टि एक चींटी पर पड़ी। वह दीवार पर चढ़ने का प्रयास कर रही थी। राजा ने देखा चींटी ऊँचाई पर चढ़ती और फिसलकर नीचे गिर पड़ती। चींटी ने अनेक बार प्रयत्न किए। हर बार चींटी जब नीचे गिर जाती तो अमरसेन को उस पर दया आ जाती। वह सोचने लगा कि बहुत हो चुका अब शायद चींटी की हिम्मत ने जवाब दे दिया है। अब वह दीवार पर चढ़ने की कोशिश नहीं करेगी। पर वह यह देखकर हैरान रह गया कि चींटी ने फिर से हिम्मत जुटाई और इस बार दीवार पर चढ़ने में सफल हो गई। यह देखकर अमरसेन को सुखद आश्चर्य हुआ। इस घटना ने उस पर गहरा प्रभाव डाला। उसका खोया हुआ विश्वास फिर से जाग उठा। उसने सोचा, जब एक चींटी बार-बार गिरने पर भी कोशिश कर दीवार पर चढ़ सकती है, तो भला मैं अपने शत्रुओं को क्यों नहीं हरा सकता। राजा अमरसेन की आँखों में आशा की चमक आ गई। उसने नए जोश एवं साहस के साथ अपनी सेना तैयार की और शत्रु पर धावा बोल दिया। शत्रु अचानक हुए इस हमले के लिए तैयार नहीं था। शत्रु की हार हुई अमरसेन को अपना राज्य फिर से मिल गया। किसी ने ठीक कहा है,''मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।''

शिक्षा : *मनुष्य को विपरीत परिस्थितयों में भी अपने साहस को बनाए रखना चाहिए।*

वर्णनात्मक प्रश्न

1. 'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान' शीर्षक को आधार बनाकर लघु कथा लिखिए और उससे मिलने वाली शिक्षा भी लिखिए।

उत्तर :

करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान

पुराने समय की बात है, छोटे से गाँव में एक गुरुकुल था; जहाँ प्रत्येक वर्ग के विद्यार्थी अध्ययन किया करते थे परंतु उनमें साहिल नाम का एक ऐसा विद्यार्थी था जो मन से चंचल था। उसका विद्या अध्ययन करने में बिलकुल भी मन नहीं लगता था।

एक दिन गुरुकुल में गुरुदेव ने सभी विद्यार्थियों को रामचरितमानस का पाठ याद करने के लिए दिया। अगले दिन सभी विद्यार्थी वह पाठ याद करके आए और गुरु को सुनाया। जैसे ही साहिल का नाम पुकारा गया, वह शांत हो गया। उसे कुछ याद ही नहीं था। गुरुदेव ने उसे एक दिन का और समय दिया। साहिल घर गया। उसने पुन: रामचरित मानस का पाठ याद किया परन्तु भूल गया। ऐसा 2-3 दिनों तक चला परंतु उसे पाठ याद नहीं हुआ। इसके चलते गुरुदेव ने उसे डाँटते हुए अक्ल का पत्थर (मूर्ख) कहकर गुरुकुल से निकाल दिया ।

साहिल निराश होकर गुरुकुल से चला गया। किन्तु उसके मन में अक्ल का पत्थर (मूर्ख) वाली बात निरंतर घूमती रही। वह आगे एक कुएँ के पास पानी पीने के लिए रुका, जहाँ एक बूढ़ी दादी कुएँ से जल निकाल रही थी। साहिल ने कुएँ से पानी निकालने में उनकी मदद की और पानी के लिए विनती की। बूढ़ी दादी ने उसे पानी पिलाया और उसके निराश चेहरे को देख उसकी वजह को जानने का प्रयास किया। साहिल ने बूढ़ी दादी को पूरी कहानी बताई। तब बूढ़ी दादी ने उसे समझाया कि, "बेटा, कभी भी निराश नहीं होना चाहिए। जैसे कि तुमने जब कुएँ से पानी निकाला तब देखा कि कैसे रस्सी की निरंतर रगड़ से कठोर पत्थर पर भी निशान आ गए हैं, उसी प्रकार किसी भी कार्य का निरंतर अभ्यास करने से अंत में सफलता अवश्य मिलती है। कितना भी मूर्ख व्यक्ति क्यों न हो वह भी बुद्धिमान बन सकता है।"

साहिल को बूढ़ी दादी की बात समझ आ गई। कुछ ही महीनों बाद उसे रामचरितमानस का पाठ कंठस्थ हो गया। उसने गुरुकुल लौटकर रामचरितमानस का मौखिक पाठ सबको सुनाया। साहिल के निरंतर प्रयासों से वह कक्षा का सबसे होनहार विद्यार्थी बन गया।

शिक्षा : *बार-बार अभ्यास करने से कठिन कार्य भी सरल-सहज हो जाता है, अंत में सफलता अवश्य मिलती है।*

2. 'लालच बुरी बला है' शीर्षक को आधार बनाकर लघु कथा लिखिए और उससे मिलने वाली शिक्षा भी लिखिए—

उत्तर :

लालच बुरी बला है

एक पिता अपने दोनों बेटों से बहुत प्यार करते थे। यह सोचते थे कि शहर चले जाएँ तो दोनों बेटों का भविष्य उज्ज्वल हो जाएगा। उन्होंने अपना पुश्तैनी घर बेच दिया। गाँव में चोरियाँ बहुत हो रही थीं। इसलिए उसने सारा पैसा एक खेत में गाड़ दिया। घर पहुँचकर घर बेचने की बात दोनों बेटों को बताई और यह भी बताया कि घर का नया मालिक एक-दो दिन में यहाँ रहने आ जाएगा। इसलिए शहर चलने की तैयारी शीघ्र करनी होगी।

घर बिकने की बात सुन दोनों बेटों के मन में खोट आ गया। दोनों सोचने लगे कि क्यों न मैं ही सारा पैसा हड़प लूँ। तरकीब सोचते हुए दोनों अपने पिता के पास गए और पूछा, "पर पैसा तो आप लाए नहीं।" पिता ने उत्तर दिया, "अरे, सारे पैसे मेरे पास हैं, तुम दोनों चिंता मत करो।"

रात को बड़ा बेटा उठा और सोते हुए पिता के सामान की तलाशी लेने लगा। तभी छोटा बेटा भी वहाँ पैसा ढूँढ़ते हुए पहुँच गया। एक-दूसरे को देख दोनों घबरा गए। तब फुसफुसाते हुए दोनों ने तय किया कि इस बूढ़े पिता को साथ ले जाकर क्या करेंगे। क्यों न हम दोनों मिलकर पैसा ढूँढे। जब पैसा मिल जाएगा तो उसका बराबर बँटवारा कर शहर भाग जाएँगे।

उन्हें पता ही नहीं चला, पिता की नींद खुल गई थी और वे उनकी सारी बातें सुन रहे थे।

अगले दिन उन्होंने सारा पैसा जमीन से निकाला और एक वृद्ध आश्रम को दान कर दिया। वे अपने बेटों की घृणित सोच से इतने दुखी हुए कि उन्होंने फ़ौरन घर छोड़ दिया और साधू का वेश धारण कर गाँव से हमेशा के लिए चले गए।

दूसरे दिन नया मकान मालिक आया और उसने दोनों बेटों को घर से निकाल दिया। अब दोनों के पास न पिता था, न घर था, और न ही पैसा।

शिक्षा : *लालच की वजह से दोनों के हाथ से पैसा भी गया, उज्ज्वल भविष्य की उम्मीद भी और पिता का प्यार भी। इसलिए लालच को बुरी बला कहा गया है ।*

3. 'बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताय' शीर्षक को आधार बनाकर लघु कथा लिखिए और उससे मिलने वाली शिक्षा भी लिखिए—

उत्तर :

बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताय

एक समय की बात है। राजा विक्रम सेन अपना शासन चलाते थे। वह बहुत ही दयालु प्रवृत्ति के थे। हालाँकि किसी भी कार्य को वह बिना विचारे ही कर देते थे, जो उनका स्वभाव बन गया था। जो उस राजा की सबसे बड़ी कमजोरी थी। राजा के पास एक चिड़िया थी, जो उन्हें अपने प्राणों से प्रिय थी। राजा की तरह चिड़िया भी उन्हें पसंद करने लगी थी। एक बार चिड़िया ने राजा से कहा कि वह अपने परिवार वालों से मिलना चाहती है। यह सुनकर राजा ने उसे तत्काल जाने की अनुमति दे दी।

जब वह अपने परिवार वालों से मिलकर राजा के पास आ रही थी, तो चिड़िया के पिता ने राजा को देने के लिए एक अमृत फल दिया। चिड़िया खुशी-खुशी उसको लेकर राजमहल में जाने लगी। महल दूर होने की वजह से रास्ते में ही रात हो गई।

चिड़िया रात में वहीं एक पेड़ पर बैठ गई। उस पेड़ के नीचे एक साँप रहता था, जो भूखा था। भोजन की तलाश में साँप ऊपर की तरफ आ गया। जहाँ चिड़िया के समीप रखे अमृत फल को साँप ने चख लिया। जिस वजह से वह फल जहरीला हो गया।

सुबह होते ही चिड़िया अमृत फल को लेकर महल की तरफ जा पहुँची और पिता के द्वारा दी गई भेंट को राजा को दे दिया लेकिन मंत्री ने राजा से कहा कि पहले इसका परीक्षण करवाना उचित रहेगा। राजा ने उस फल का परीक्षण एक पशु पर करवाया।

फल का टुकड़ा खाते ही पशु मर गया और वह अमृत फल विषैला फल सिद्ध हो गया। इस बात पर राजा काफी क्रोधित हो गए और चिड़िया से कहा कि, "धोखेबाज चिड़िया! तू मुझे मारना चाहती है। अब तू ही मर।" राजा ने चिड़िया को मौत के घाट उतारकर महल के बाहर बगीचे में उस अमृत फल के साथ गढ़वा दिया। उस स्थान पर एक वृक्ष खड़ा हो गया जिस पर कई अमृत फल लगने लगे थे। मंत्री ने राजा से कहा कि यह फल भी विषैले होंगे, अत: इसके पास किसी को न जाने की आज्ञा देना उचित रहेगा। सम्राट ने आदेश जारी करते हुए पेड़ के चारों तरफ ऊँची-ऊँची दीवारें बनवा दीं ताकि कोई पेड़ तक पहुँच न पाए।

उस राज्य में एक बूढ़ा और बुढ़िया रहते थे, जो भयंकर कोढ़ रोग से ग्रस्त थे। वह भूखे भी थे। जिस पर बुढ़िया ने बूढ़े से कहा कि महल से उन विषैले फलों को क्यों नहीं तोड़ लाते ताकि हम इन कष्टों से आजाद हो सकें।

बूढ़े ने अपना प्रयास कर महल से वह विषैले फल प्राप्त कर लिए और दोनों ने आधा-आधा फल खाया लेकिन इस फल को खाने के बाद दोनों का रोग समाप्त हो गया। यह देख वह आश्चर्यचकित हो गए। उन्होंने सारा वृत्तांत राजा को कह सुनाया।

राजा उनकी बातों को सुनते ही अपने किए पर पछतावा करने लगे। उस समय राजा ने एक निश्चय किया कि वह भविष्य में कभी भी कोई भी काम बिना सोचे-समझे नहीं करेंगे। राजा ने चिड़िया की याद में महल के बाहर एक भव्य मंदिर का निर्माण कर सदा-सदा के लिए उस चिड़िया को अमर कर दिया।

शिक्षा : *बिना सोचे विचारे कोई भी काम नहीं करना चाहिए।*

4. 'परोपकार सबसे बड़ा धर्म' शीर्षक को आधार बनाकर लघु कथा लिखिए और उससे मिलने वाली शिक्षा भी लिखिए—
[Delhi Gov. 2021]

उत्तर :

परोपकार सबसे बड़ा धर्म

समुद्र के किनारे एक लड़का अपनी माँ के साथ रहता था। उसके पिता नाविक थे। कुछ दिनों पहले उसके पिता जहाज लेकर समुद्री-यात्रा पर गए थे। बहुत दिन बीत गए पर वे लौटकर नहीं आए। लोगों ने समझा कि समुद्री तूफान में जहाज डूबने से उनकी मृत्यु हो गई होगी।

एक दिन समुद्र में तूफान आया, लोग तट पर खड़े थे। वह लड़का भी अपनी माँ के साथ वहीं खड़ा था। उन्होंने देखा कि एक जहाज तूफान में फँस गया है। जहाज थोड़ी देर में डूबने ही वाला था। जहाज पर बैठे लोग व्याकुल थे। यदि तट से कोई नाव जहाज तक चली जाती तो उनके प्राण बच सकते थे।

तट पर नाव थी; लेकिन कोई उसे जहाज तक ले जाने का साहस न कर सका। उस लड़के ने अपनी माँ से कहा—"माँ ! मैं नाव लेकर जाऊँगा।" पहले तो माँ के मन में ममता उमड़ी फिर उसने सोचा कि एक के त्याग से इतने लोगों के प्राण बचा लेना अच्छा है। उसने अपने पुत्र को जाने की आज्ञा दे दी।

वह लड़का साहस करके नाव चलाता हुआ जहाज तक पहुँचा। लोग जहाज से उतरकर नाव में आ गए। जहाज डूब गया। नाव किनारे की ओर चल दी। सबने बालक की प्रशंसा की और उसे आशीर्वाद देने लगे संयोग से उसी नाव में उसके पिता भी थे। उन्होंने अपने पुत्र को पहचाना। लड़के ने भी अपने पिता को पहचान लिया। किनारे पहुँचते ही बालक दौड़कर अपनी माँ के पास गया और लिपटकर बोला, "माँ! पिता जी आ गए।" माँ की आँखों में हर्ष के आँसू थे। लोगों ने कहा, "परोपकार की भावना ने पुत्र को उसका पिता लौटा दिया।"

शिक्षा : *परोपकार से मन को शांति और सुख मिलता है। परोपकारी व्यक्ति का नाम संसार में अमर हो जाता है।*

5. ⓐ 'यदि मैं सुपरमैन होता' शीर्षक को आधार बनाकर लघु कथा लिखिए और उससे मिलने वाली शिक्षा भी लिखिए—
[Delhi Gov. 2021]